हंसिनी

उषा यादव

'तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ पम्मी, थोड़ी देर सो जाओ अब। बहुत जग चुकी हो।' नींद का झोंका खाती निशा ने आजिज़ कंठ से तीन वर्षीय बेटी की खुशामद की।

बेटी कोई कम थी भला? तत्काल उसने भी माँ की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़ दिए— 'तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ मम्मी, थोड़ी देर जग जाओ अब। बहुत सो चुकी हो।'

बेटी की हाज़िरजवाबी पर निशा को हँसी आ गई। सच, लगातार दो-ढाई घंटे से बच्ची उसका मन मोह रही है, पर वह इन बाल-क्रीड़ाओं का आनन्द लेने की मनःस्थिति में है कहाँ? इस समय उसकी प्राथमिकता सिर्फ़ नींद है। कम से कम घण्टे भर की गहरी नींद।

रात नौ बजे जम्मूतवी स्टेशन पर रेलगाड़ी में सवार होने से पहले तीन घंटे का भीड़ भरा बस का सफ़र। उससे पहले पूरी दोपहर यात्रा की तैयारी। और उससे भी पहले सुबह के वक्त का, दोनों बच्चों की चिल्ल-पों और घरेलू कामों के बवालों में पता नहीं कब फुर्र हो जाना।

सोचने बैठें तो पूरा पोथा तैयार हो जाएगा।

कल रात शायद छुटके के पेट में दर्द था, इसने तबियत से जगाया। परसों रात रवि देर से एक शादी से लौटे, लेटने में ही बारह बज गये। उसके पहले...

छोड़ो, रोज़ का पचड़ा है यह तो।

हाँ, रेल पर चढ़ने के बाद अवश्य उसने हलकापन महसूस किया था- चलो, रिज़र्वेशन होने से रात अब आराम से कटेगी। सुबह दिल्ली स्टेशन पर उतरते समय तन-मन तरोताज़ा रहेगा। कल ही परीक्षा केन्द्र पर पहुंचकर लेक्चररशिप पात्रता परीक्षा देनी है। इसके लिए पढ़ाई के भूले-बिसरे बिन्दुओं को दिमाग में सिलसिलेवार बैठाना ज़रूरी है। इस उलझन और तनाव को सिर्फ़ वही समझ सकती है, कोई दूसरा नहीं। इम्तहान की तैयारी न हो सकने का असंतोष व्यक्त करते ही रवि ने फौरन ताना दिया था— 'डिग्री क्या जालसाज़ी से मारी है, यार? तुम तो यूनिवर्सिटी टॉपर हो न?'

बहुत कुछ कहना जानती है वह भी, पर गृह कलह के अंदेशे से बात आगे नहीं बढ़ाती। शब्द होंठों तक आकर रुक जाते हैं— यूनिवर्सिटी में टॉप अपने माता-पिता के घर रहकर किया था, जहाँ सिर्फ़ पढ़ाई-लिखाई से नाता था। इस घर के खटराग किसी से छिपे हैं? बहू की सारे दिन की मशक़्क़त को दरकिनार करके सासू माँ घर के पापड़-बड़ी-अचारों का शौक फरमाती हैं। शादी के एक साल के भीतर एक लड़की जन दी थी, पर उनकी पोता खिलाने की हौंस ने दूसरी संतान का बोझ ढोने को मजबूर किया। अब भी कहां चैन से जीने देता है यह घर। एक आमदनी में खर्च न चल पाने का मानसिक दबाव डालकर नौकरी करवाने पर तुला है। वैसे कहीं ले चलने के नाम पर पचासों बहाने बनते, किन्तु लेक्चररशिप के इम्तहान के नाम पर...

'मम्मी, ओ मम्मी, वो वाले अंकल क्या सोते हुए गाना गा रहे हैं?

पम्मी ने एकाएक कंधा पकड़कर हिलाया, तो निशा चौंक कर होश में आई 'शीऽऽ' करके उसने जल्दी से बेटी को बरजा। धीरे से समझाया— 'कुछ लोगों की नींद में खर्राटे लेने की आदत होती है। अंकल भी सोते हुए खर्राटे ले रहे हैं।'

'मैं भी सोते हुए खर्राटे लेती हूँ?'

'नहीं।'

'पापा लेते हैं?'

'पम्मी, बहुत हो चुका, चुप हो जाओ अब।' निशा ने बिटिया को पहले धमकाया, फिर मनुहार भरे कंठ से दुलारा— 'मेरी रानी गुड़िया, अब सो जाओ तुम। देखो, छोटा भइया, पापा, डिब्बे के सारे अंकल-आंटी सोए हुए हैं। सिर्फ़ तुम जाग रही हो और तुम्हारी वजह से मुझे भी जागना पड़ रहा है।... न?'

'हाँ।' पम्मी ने स्वीकार किया और झट रानी गुड़िया बनकर बर्थ पर लेट गई— 'मम्मी, मुझे कंबल ओढ़ा दो। मैं सोऊंगी। तुम भी सो जाओ।'

अपनी तरकीब सफल होते देख निशा मुदित हुई। उसने पम्मी को कंबल ओढ़ाया। अपने लिए जगह बनाकर लेटने को हुई ही थी कि छुटके राम कुनमुना उठे। फुर्ती से पर्स से दूध की बोतल निकाल कर, बच्चे की नींद टूटने के भय से उसने तत्परता से उसके मुँह से लगा दी।

बिटर-बिटर ताकती पम्मी अगले ही क्षण कंबल फेंककर उठ बैठी और बोल पड़ी— 'मुझे भी भूख लगी है। दूध पिऊँगी।'

'तुम मम्मी-पापा के साथ खाना खा चुकी हो न, चुपचाप सो जाओ।'

'उहं!' लड़की ठुनकी।

देखो बेटे, यह घर नहीं रेलगाड़ी है। दूध खत्म हो गया तो छोटा भइया सारी रात रोएगा। तुम तो इसकी दीदी हो न, समझदार हो। ज़िद मत करो।'

'ऊं... ऊं... दूध।'

लड़की फिर मचली, तो डिब्बे में इधर-उधर निगाह फेंक, सहयात्रियों को सोता पाकर, भिंचे कंठ से बेटी पर बरस पड़ी निशा— 'चंडालिनी कहीं की। कितनी देर खून पियेगी मेरा? सोती है कि बुलाऊँ झोली वाले बाबा को? आकर तुझे पकड़ ले जाएं।'

'नहीं।' तीन साल की दुधमुंही बालिका घिघियाई और सहम कर उसने आंखे मूंद लीं।

निशा को अपनी कठोरता पर ग्लानि हुई। नन्हीं बच्ची का कोई कसूर नहीं। आखिर कितना सोएगी बेचारी? पहले दोपहर में डांट-डपट कर सुलाई गई। फिर शाम को भीड़ भरी बस में क्लान्ति अनुभव कर खुद सो गई। उस वक्त रवि को टोका था उसने कि इसे जगाए रहो, वरना रात में नहीं सोएगी। पर चुप्पी साध गए श्रीमान्। अपना तात्कालिक स्वार्थ उन्हें बच्ची के सोये रहने में जो दिख रहा था।

एक ठंडी सांस निशा के होठों से निकली। थके तन को थोड़ी जुम्बिश देते हुए उसने पम्मी की ओर देखा— डांट खाकर छोकरी सो गई थी। यानी अब कुछ देर वह भी अपने हाथ-पैर सीधे कर सकती थी। पर छुटका तभी दुबारा कुनमुनाया। ज़रूर सू-सू या पॉटी...

उसकी आशंका सच निकली। बच्चा वास्तव में गंदगी में सना पड़ा था।

सफ़ाई-अभियान सम्पन्न कराने के बाद छुटके ने पेट-पूजा की फरमाइश करते हुए अपनी नन्हीं दंतुलियां दिखाईं तो निशा रीझ उठी। अपनी नींद-थकान भूलकर उसने बच्चे को चूमा और झुककर बर्थ के नीचे से टोकरी निकाली।

पर यह क्या? पता नहीं कब और कैसे टोकरी में रखा दूध का डिब्बा लुढ़क कर खुल गया था और सारा दूध...

छोटे बच्चे के साथ बगैर दूध के लंबा सफ़र काटने की कल्पना ही कष्टप्रद थी। किन्तु जल्दी ही इस अवसन्न अवस्था से उबर कर निशा ने पर्स से ग्लूकोज़ के बिस्कुटों का पैकेट निकाला और एक बिस्कुट चूर-चार करके बच्चे को खिलाने लगी।

नौ माह का शिशु बिस्कुट से बहल भले जाए, पेट भरने की तृप्ति नहीं पा सकता था। हताशा और बेबसी से निशा की आँखे भीग आईं। अपनी नींद की बात भूलकर, बच्चे को गोद में लेकर वह थपकने लगी।

सहयात्रियों में से कोई कभी खांसता-खखारता। प्लेटफार्म पर गाड़ी रुकी देखकर खिड़की के शीशे पर आँखें गड़ा, स्टेशन का नाम पढ़ने की चेष्टा करता। बीड़ी-सिगरेट सुलगाता, टॉयलेट के लिए उठता। आधी रात को बच्चा गोद में लिए जागती महिला के प्रति हर आँख संवेदनशील हो उठती। सिर्फ़ एक शख्स को उसकी परेशानी का अहसास न था और वह था मध्य बर्थ पर घोड़े बेचकर सोया हुआ उसका पति।

अव्यक्त क्षोभ से तिलमिला उठी निशा। रोष के साथ-साथ मन में अभिमान भी जागा— ठीक है सोये रहें हज़रत। वह जगाएगी भी नहीं। जो संतान उसने पैदा की है, उसे पालने की ज़िम्मेदारी भी उसी की है। अपने बच्चों को सारी रात अकेले दम पर संभाल लेगी।

पर सारी परेशानी मस्तिष्क के रंगमंच पर भरतनाट्यम करती निद्रा-सुन्दरी के अद्‌भुत लास्य को लेकर थी। निशा का सिर कभी दाएं, कभी बाएं झुकता। लुढ़कने को होती देह बमुश्किल संभलती। आंखों में भरी अजीब-सी कड़वाहट, दिमाग में बढ़ता शून्यता बोध और काफी देर से एक मुद्रा में बैठे रहने से सोए हुए बाएं पैर की झुनझुनी, जैसे उस नृत्य की संगत करने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले कलाकार थे। इन सबका जादू उसके सिर पर चढ़कर बोल रहा था और वह विवश-असहाय भाव से इनके सम्मोहन-जाल में बंधती चली जा रही थी।

जैसे-तैसे छुटका सोया तो डिब्बे की हलकी रोशनी में निशा ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली— सुबह के पौने पांच बजे थे। हालांकि यह जागरण की बेला थी, पर अभी दो घंटे की नींद लेकर वह अपने थके तन-मन को राहत दे सकती थी।

कमर सीधी करने से पहले एक बार टॉयलेट हो आने की इच्छा ने ज़ोर मारा तो निशा अपनी बर्थ से नीचे उतरी। सोये पैर की वजह से वह लड़खड़ाई भी। जैसे-तैसे हाथ से रगड़कर उसने पैर को चलने लायक बनाया और आगे बढ़ी। किन्तु लौटकर आने के बाद जो दृश्य देखा, माथा पकड़कर खड़े रह जाने के सिवाय कुछ न कर सकी।

कच्ची नींद में सोया छुटका उसके हटते ही खुद तो जगा ही था, सोई हुई पम्मी को भी जगा चुका था। और अब मुस्कराता छुटका और रुँआसी पम्मी उसके धैर्य की परीक्षा लेने के लिए तैयार बैठे थे।

निशा ने आव देखा न ताव, कुछ देर पहले का अपना संकल्प भूल, रवि को कंबल सहित झकझोर दिया— 'उठो जी, कितना सोओगे? नीचे आकर बच्चों को संभालो।'

'ऐंऽऽ—' गहरी नींद से एकाएक जगा दिए जाने पर हड़बड़ाया रवि कुछ समझ न सका।

'नीचे उतरो। बच्चों को संभालो। मैं अब एक मिनट भी इन्हें झेल नहीं सकती।'

'बात क्या है यार?' रवि जंभाई लेते हुए उठ बैठा और कलाई घड़ी में समय देख, तनिक रुखाई से बोला— 'अरे, अभी तो सिर्फ़ पांच बजे हैं इतनी जल्दी मुझे क्यों जगा दिया?'

'क्योंकि मैं रात भर जगी हूँ। मुझे भी थोड़ी नींद-आराम की ज़रूरत है।'

'तो सोइये न, रोका किसने है? सुप्त सौंदर्य की रखवाली के लिए पति नामधारी जीव का पहरा देना ज़रूरी है क्या?' रवि की तीखी आवाज़ गूँजी।

'रवि।'

अपने क्रोध के उबाल को संयम-जल के छींटों से शांत करने में निशा को पूरी ताकत लगा देनी पड़ी। क्षणिक विराम के बाद ठंडी आवाज़ में बोली वह— 'प्लीज़, मेरी बात समझने की कोशिश करो और बेवजह बहस करने के बदले नीचे आकर बच्चों को संभालो।'

'जब दिन भर तुम इम्तहान में फंसी रहोगी, तब बच्चों को कौन संभालेगा?'

'मतलब?... मैं समझी नहीं।'

मतलब यह कि जब दिन भर मुझे ही बच्चे संभालने हैं, तो इस वक्त थोड़ा आराम करके कौन-सा गुनाह कर रहा था?... बिना बात जगा कर रख दिया।'

'रात भर सोये तो हो तुम!'

'तुमने देखा था?' रवि और ज़्यादा उखड़ गया—'मैडम, यहाँ सारी रात जगते हुए कटी है। रेलगाड़ी में मुझे नींद-वींद नहीं आती। बस देह सीधी हो जाती है। मुश्किल से आध घंटा पहले ज़रा आँख लगी थी... हुँह...'

निशा में लड़ने की ताकत कहाँ शेष थी? गंभीर कंठ से सिर्फ़ इतना बोली— 'नीचे उतरो और बच्चों को संभालो। तुम्हारे बिस्तर में अब कुछ देर मैं सोना चाहती हूँ।'

'ठीक है।' रवि चिढ़कर बोला और नीचे उतर आया।

दोनों बच्चों ने मुस्कान बिखेरकर पिता का स्वागत किया, तो उसका सारा गुस्सा काफूर हो गया। बर्थ पर बैठते हुए बोला—

'आओ पम्मी, अब हम लोग एक मज़ेदार खेल खेलेंगे।'

'भइया भी खेलेगा?'

'नहीं, वह मम्मी के साथ ऊपर जाकर सोएगा।'

'ओह रवि, तुम्हें बताया न, मैं कुछ देर चैन से सोना चाहती हूँ। बच्चे के साथ यह कैसे मुमकिन होगा?'

'तो क्या मैं दोनों बच्चों को एक साथ झेलूँगा? ...न बाबा न।' रवि ने तुरंत कंधे झटक दिए। 'मैंने भी तो सारी रात दोनों बच्चों को अकेले ही....'

निशा ने न्याय की दुहाई देनी चाही, पर रवि की आँखों से स्फुलिंग झरते देख, बात अधूरी छोड़कर छुटके को उठा लिया। मध्य बर्थ पर अपने साथ लिटाकर, कंबल में दबोच कर, अशक्त हाथों से थपकने लगी— 'सो जा... राजदुलारे सो जा...'

इसके बाद उसकी नींद से बोझिल पलकें मुंदती चली गईं। नीचे से आती बाप-बेटी की आवाज़ें श्रवण सीमा से और और दूर जाने लगी—

'पम्मी बेटे, कहो गाय।'

'गाय।'

'गाय का बच्चा।'

'गाय का बच्चा।'

'गाय दूध देती।'

'गाय गुड़ खाए।'

'गाय गुड़प्प।'

और फिर किसी पाताल लोक से आता ठहाका उसकी नींद में गड़घ हो गया। थपकी देते हाथ कब रुके, पास में लेटा छुटका कंबल की गिरफ़्त से कब आज़ाद हुआ, थोड़ी देर बैठकर ताली बजाने के बाद उसके पेट के सहारे कब खड़ा होने लगा, निशा जान नहीं सकी। वह तो नींद की अंधेरी गुफाओं के विस्तार में धँसती जा रही थी।

अचानक वह हड़बड़ा कर जागी और अपने पेट के सहारे उछलते छुटके का संतुलन न संभाल सकने के कारण नीचे गिरते देख बदहवास हो उठी। किंतु बच्चे को पकड़ने की जी-जान की कोशिश के बावजूद सफल न हो सकी और इसी बदहवासी में शिशु को लिए-दिए खुद भी धड़ाम से नीचे आ गिरी।

रवि का एक चीख के साथ गिरे हुए बच्चे को उठाना, सब ओर से छू-टटोलकर चोट की गंभीरता का अनुमान लगाना, गोरे-गदबदे शिशु के लिए सहयात्रियों की अछोर चिन्ता का पारावार उमड़ना...

डिब्बे के फर्श पर पड़ी निशा लाचारी की हालत में सब देखती रही। उठने की भरसक कोशिश के बावजूद उससे उठा नहीं गया। दो बच्चों के जन्म के बाद पहले जैसी दुबली-छरहरी तो रह नहीं गई थी। उस पर अचानक गिरने से कमर के चोटिल होने के साथ-साथ पांव के बाएं पंजे में भी मोच आ गई थी। पर उसकी चिंता सिर्फ़ बच्चे के लिए थी। दस आदमियों के बीच ऐसी विषम परिस्थिति में पड़ जाने का लज्जा-बोध भी कम नहीं था।

'बहनजी को तो उठाइए श्रीमान जी। लगता है, ज़्यादा चोट खा गई हैं।' तभी किसी सहयात्री ने संवेदनशील कंठ से कहा।

रवि ने यह बात या तो सुनी नहीं या सुनकर भी अनसुनी कर दी। वह बच्चे को संभालने में व्यस्त रहा।

जो भी हो, निशा खुद कोशिश करके उठी और गहन लज्जा तथा आंतरिक अपराध भावना से भरी हुई पास की सीट पर बैठ गई।

बच्चा लगातार रोए जा रहा था। पर धीरे-धीरे उसका रोना, सिसकियों में तब्दील हो गया और फिर सिसकियाँ भी थम गईं। हालांकि उसकी कोमल देह रह-रहकर अभी भी हिल उठती और वह थोड़ा ठहर कर दुबारा रोना चालू कर देता, पर ज़ाहिर था उसे ज़्यादा चोट नहीं आई है।

रवि के हँसाने पर जब बच्चा हँस दिया और सहज दिखने लगा, तो उसकी ओर से निश्चित होकर वह पत्नी की ओर मुड़ा। अधरों को तिरछा करते हुए ताना दिया— 'मैडम, अगर आप इतना अनईज़ी फील कर रही थीं तो मुझसे कह सकती थीं। मेरे मासूम बेटे से कौन सी दुश्मनी थी, जो उसे गेंद की तरह नीचे पटक दिया?'

निशा के अधर कंपकंपाए। बच्चे के गिरने की कैफ़ियत उसे देनी होगी? और वह भी इस शख्स को जो रात भी लंबी ताने पड़ा रहा है। यह 'बापपन' उस वक्त कहाँ चला गया था, जब बच्चों ने सारी रात उसे जगाया, जब अभी कुछ देर पहले गंदगी में सने बच्चे की उसने सफ़ाई की, जब...यानी वह इस आदमी की संतान की आया भर है? पालने-पोसने का ठेका उसका, बच्चे की आँख में आँसुओं की जवाबदेह भी वही?

पर मुसाफ़िरों से भरे डिब्बे में, बात आगे न बढ़ाने की नीयत से वह चुप रही। नज़रें झुकाए बैठी रही। हाँ, कुछ पल बाद यह महसूस करके कि छुटका उसकी गोदी में आना चाह रहा है, उसने अपनी दोनों बाहें ज़रूर बच्चे की तरफ़ बढ़ा दीं।

पर उसकी इस अनाधिकार चेष्टा को बड़ी कठोरता से कुचल दिया रवि ने। बढ़े हाथों को धकियाते हुए चीखा— 'खबरदार, जो मेरे बच्चे को हाथ लगाने की जुर्रत की। बेहया, ज़लील औरत, तू माँ है?... माँ के नाम पर कलंक है। अपनी आरामतलबी में खलल पड़ता देख एक दुधमुँहे को नीचे पटक सकती है। तुझमें और कंस में कोई फ़र्क़ है क्या?'

'रवि प्लीज़ थोड़ा शांत रहो।' निशा ने धीमी आवाज़ में समझाना चाहा तो वह और भड़क उठा— 'क्यों शांत रहूँ? मेरे बेटे की जान चली जाती तो उसे लौटा देती तू?'

'दरअसल मैं रात भर की जगी थी...'

'तो मुझसे कहती। मैं ज़हर की एक गोली खिलाकर हमेशा के लिए सुला देता। साली कामचोर, निकम्मी औरत। बच्चा पालने का सलीका भी नहीं जानती। हर वक्त पांव पसार कर सोने के सिवाय कुछ आता है तुझे?'

निशा ने दबी निगाहों से चारों ओर देखा— आस-पास बैठे सहयात्री सपाट चेहरा लिए मौन धारण किए हुए थे। आजकल पराये मामले में कोई नहीं बोलता। उस पर यदि मियां-बीबी का आपसी मसला हो, तो और चुप्पी साध ली जाती है। पर बहरा तो उनमें कोई नहीं था न। मियां के हाथों बीबी की फजीहत होती देख अपने मन में जाने क्या सोचते होंगे?

अपने तन की कीमती साड़ी, मैचिंग बिंदिया-चूड़ियाँ, कानों की झिलमिलाती बालियाँ और पास में पड़ा चमड़े का बड़ा पर्स, सब कुछ इस समय निशा को एकदम निरर्थक और बोझिल प्रतीत होने लगा। फिजूल इतनी बन-ठन कर रेलगाड़ी में चढ़ी वह। देखने वाले सोचते होंगे कि इस चमक्को की औकात मर्द के पांव की जूती के बराबर भी नहीं है।

घर के अंदर, गुदगुदे डबल बैड पर, अगर पति ने उसके तलवे भी चाट लिए तो किसने देखा? इज़्ज़त बनती है चार आदमियों के सामने। मुसाफिरों से भरे डिब्बे में इस प्रकार अपमानित किए जाने की पीड़ा क्या सचमुच असह्य नहीं है?

वह धीरे से बुदबुदाई— 'तुम चुप नहीं रह सकते, रवि? मन में जितनी भड़ास है, घर जाकर निकाल लेना। यहाँ चार आदमियों के बीच मुझे और ज़्यादा नक्कू मत बनाओ। ऐसी घटना कभी भी, किसी के साथ भी घट सकती है।'

'नहीं, ऐसी बेवकूफ़ी सिर्फ़ तू ही कर सकती है। दो बच्चों की माँ हुई, फूहड़पन जस-का-तस बरकरार रहा। अब और किसी उम्र में तमीज़ सीखेंगी, मैडम?'

रवि के गुस्से की आग शायद और देर तक लपटें बिखेरती, पर छुटके को मचलता देख कर उसे अपने आवेश पर विराम लगाना पड़ा।

'यह भूखा है।' निशा ने दबी आवाज़ में बताया।

बच्चे को गोद में लिए हुए ही रवि ने दूध की बोतल तलाशी। उसे खाली पाकर गुर्राया— 'कहाँ रखा है दूध?'

'खत्म हो चुका।' निशा ने सहमते हुए सूचना दी।

'घर से लेकर नहीं चली?' यह ज़िम्मेदारी भी मेरी थी क्या?'

'चली तो थी, पर ढक्कन खुल जाने से डिब्बे का सारा दूध टोकरी में फैल गया।'

'फूहड़, बेशऊर औरत। छोटे बच्चों के साथ सफ़र करने का सलीका नहीं जानती। तमीज़ के नाम पर सिफर।'

'लाओ, मैं इसे बिस्कुट खिला दूँ।' निशा ने पास पड़े पर्स को उठाकर ग्लूकोज़ की बिस्कुटों का पैकेट निकालते हुए कहा।

'ज़्यादा तेज़ी मत दिखाना समझी। बच्चे को अगर हाथ भी लगाया तो मैं वहीं हाथ तोड़कर फेंक दूँगा।' रवि ने अंगारे उगले।

एक बार फिर निशा की आँखें बरसने को हो आईं— वह बच्चे को हाथ भी नहीं लगा सकती? उसका इतना अपमान और वह भी भरी भीड़ में? ...कौन सोचता होगा कि वह एम.ए. में अपने विषय की टॉपर है और लेक्चररशिप पात्रता परीक्षा देने जा रही है। पलट कर वह भी अगर कुँजड़िनों की शैली में बात करने लगे, तो इस आदमी की क्या इज़्ज़त रह जाएगी। सिर्फ़ अपनी शालीनता की वजह से चुप है और उसकी सहिष्णुता को अपराध की स्वीकृति मानते हुए हज़रत धमकाए चले जा रहे हैं।

पर्स से निकाला ग्लूकोज़ के बिस्कुटों का पैकेट हाथ में पकड़े हुए निशा किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठी।

'मम्मी, मुझे बिस्कुट दे दो, मैं खाऊँगी।' बड़ी देर से मुँह में उंगली डाले बैठी पम्मी अचानक हरकत में आई और हथेली फैलाकर माँ की ओर बढ़ी।

'कहाँ चली पम्मी? अपनी जगह से अगर हिली भी तो झोली वाले बाबा को बुलाकर तुम्हें पकड़ा दूँगा।'

बच्ची तनिक दुविधाग्रस्त दिखाई दी। पल भर उसने कुछ सोचा और फिर पिता की आँखों में बेबाक दृष्टि डालते हुए पूछा— 'कहाँ है झोली वाला बाबा?'

'उधर।... अभी इधर आने वाला है।' रवि ने उंगली से इशारा करते हुए बताया।

'आ जाने दो।' बच्चे ने उपेक्षा से सिर हिलाया और पिता के आदेश का उल्लंघन करने हुए सीधे माँ की गोद में जा बैठी। अपनी दोनो कोमल हथेलियों में निशा का चेहरा थामते हुए बोली— 'मम्मी, तुम दुखी मत हो। अभी झोली वाला बाबा इधर आएगा। अपन लोग उससे कहेंगे कि पापा को पकड़ कर ले जाए।'

अब तक खामोशी से सारे घटनाक्रम का जायज़ा लेते सहयात्री अबोध बच्ची की इस बात को सुनकर ठठाकर हँस पड़े। सबकी हँसी से रवि किंचित हतप्रभ हुआ, फिर अपने होठों पर एक खिसियानी हँसी लाकर उसे भी उनका साथ देना पड़ा।

पल भर बाद भीतरी कुढ़न उसकी ज़बान पर आई— 'तुम बहुत ज़बान चलाना सीख गई हो पम्मी, गलत बात है। बोलो, तुम्हारी पिटाई करूँ?'

बेटी न डरी, न घबराई। उसने निर्भीक भाव से पहले माँ का गाल चूमा, फिर भर्त्सना भरे कंठ से बोली— 'पापा गंदे। ... मम्मी अच्छी।'

एक बार फिर आस-पास के लोगों का अट्टाहास गूँजा। कई गूंगी ज़बानें बात का सूत्र पकड़ कर मुखर हो उठीं—'बच्ची समझदार है जी, सही बात कर रही है।'

'आजकल के बच्चे बहुत तेज़ होते हैं जनाब, उन्हें हम-आप डरा-धमका कर काबू में नहीं ला सकते।'

'और फिर, ये बाल-भगवान हैं जी, बिना किसी लाग-लपेट के सच्चाई इन्हीं के मुँह से तो निकलती है।'

रवि का चेहरा बुझ-सा गया। अपनी सफ़ाई में एक शब्द भी नहीं बोल पाया वह।

उधर रोमांचित निशा को लगा— अरे, फैसला हो भी गया? वादी-प्रतिवादी पक्षों की दलीलों को ध्यानपूर्वक सुनने के बाद न्यायविद् की कलम से लिखा एक ऐसा निष्पक्ष फैसला, जिसे सहज ही व्यापक जन-समर्थन मिल गया है? उसकी आँखें भर आईं —भगवान शायद इसीलिए बेटियों को धरती पर भेजता है ताकि वे गूँगी-बहरी-लाचार मांओं की वाणी और सहारा बन सकें, उनकी जख्मी कलेजों पर मरहम धर सकें।

और निशा ने तनिक झुककर अपनी नन्ही हंसिनी का चेहरा चूम लिया।